IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''भारतीय कला में कृश्ण ाा रेड्डी के छापा चित्रों का विकासात्मक अध्ययन''

विषाल कुमार (ड्राइंग एण्ड पेन्टिग)

षोधार्थी– भीमराव अम्बेडकर विष्वविद्यालय आगरा

– डॉ0 सुनीता गुप्ता

षोध निर्देषिका एसोसिएट प्रोफेसर एंव विभागाध्यक्षा चित्रकला विभाग, धर्म समाज महाविद्यालय अलीगढ़ (उ0प्र0)

कृश्णा रेड्डी का सम्पूर्ण सृजन छापा कला के तकनीकी विकास पर आधारित है। यह कार्य आपके योगदान का प्रतिबिम्ब है। आप ने अम्लांकन विधि में उच्च तकनीक, कल्पना, संगीतमयता, फोटोग्राफए रेखांकन आदि के संष्लेशण का मूर्त– अमूर्त प्रयोग अपने छापा चित्रों में किया है। चित्रों के विशय सार्वभौमिक लिए है तथा व्यंग चित्रों का भी निर्माण किया है। चित्र तल को भी अनेक प्रकार से विभाजित कर संयोजित करने की प्रक्रिया का विकास किया है। आपके छापा चित्र आकर्शक एंव षक्तिषाली है जिनमें ज्यामितिक बनावट, तरल व जैविक रूपाकार परिलक्षित होते है। प्रकृति का अनुकरण न करके उसकी ऊर्जा व षक्ति को विविध रेखाओं ,विकर्ण,वृत्ताकार व सर्पिल रेखाओं द्वारा अपने छापा चित्रों में प्रदर्षित करते है। विचित्र अतीन्द्रिय रूपाकारों को स्पन्दन का विस्तरण व संकुचन करते हुए विविध टेक्सचर प्रयुक्त किये जो अद्वितीय रंगों व प्रकाष से ओत प्रोत है। आपने प्रत्येक रूपाकार को प्रतीको के स्वरूप में रेखांकन द्वारा विष्लेशित किया है। इनकी विस्कोसिटी प्रक्रिया में बहुरूपदर्षी प्रभाव दिखाई देते है।

''क्लाउनफार्मिंग'' नामक छापा चित्र ऐसा ही उदाहरण है जिसमें तालियॉ बजाती भीड़ ,मसखरे के चारों ओर चक्राकार आलेखन बनाती है जिसमें अद्भुद अभिव्यंजकता है। आपने छापा चित्रों में सदैव प्रभावषाली व अद्भुद रंग योजना का चयन किया है तथा धातु प्लेट पर किया गया कार्य भी तक्षण के समान लगता है इनके उभरे हुए छापा चित्र मूर्तिकला की याद दिलाते है। इनके डिमान्स्ट्रेषन नामक छापा चित्र में यह विषेशता परिलक्षित होती है।

कृश्णा रेड्डी का जन्म 15 जुलाई 1925 को आन्ध्र प्रदेष के चित्तूर जिले में स्थित नन्दनूर नामक ग्राम में हुआ। आपने षान्तिनिकेतन के कला भवन में नन्दलाल बोस तथा विनोद बिहारी मुखर्जी के निर्देषन में कला की षिक्षा प्राप्त किया। इन्होंने यही पर 1941 से 1946 ई0 तक कला विशय पर अध्ययन का कार्य किया। 1947 से 1949 ई0 तक वह कला क्षेत्र फाउण्डेषन के कला विभाग में प्रधान षिक्षक रहे है। मोन्टेसरी टीचर्स ट्रेनिंग सेन्टर मद्रास में अध्यापन कार्य किया है तथा यही पर मूर्तिकला में रूचि उत्पन्न हुई। 1949 ई0 में वह लंदन गये तथा वही पर स्लेड स्कूल में मूर्तिकला का अध्ययन किया और यहीं पर हेनरीमूर से भी षिक्षा ग्रहण किया। 1950 ई0 में कृश्णा रेड्डी पेरिस चले गये तथा वही पर ब्रांकुसी से मुलाकात हुई। पेरिस में स्टनले विलियम हेटर से उत्कीर्ण कला सीखी है।

जादकिन ने कृश्णा रेड्डी की प्रतिभा को पहचान कर उसे 'एतेलिए–17' कार्यषाला में हैतर से छापा चित्र कला का प्रषिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी। पेरिस में जब आधुनिक कला के प्रमुख आन्दोलन पूरी तरह से सामने आ चूके, तब एस0 डब्लू हैटर ने सन् 1926 ई0 में एतेलिए–17 की स्थापना किया। जॉन मीरो, मैक्स अर्न्स्ट तथा आन्द्रे मैसो आदि अनेक महत्वपूर्ण आतियथार्थवादी कलाकार इस कार्यषाला से सम्बद्ध रहे है।

द्वितीय विष्वयुद्ध के कारण एतेलिए को दस से भी अधिक वर्शो के समय के लिए अमेरिका जाना पड़ा, जहॉ आज हजारों कार्यषालाएँ है। सन् 1950 ई0 में एतेलिए.17 वापस पेरिस में सक्रिय हुआ है। जादकिन की सलाह पर सन् 1953 ई0 में कृश्णा रेड्डी पेरिस में इसमें आ जुड़े तथा विलियम हैटर से ग्रामिक कला प्रषिक्षण प्राप्त करना प्रारम्भ किया। सत्तर के दसक तक वह यही रहे है।

बहुत जल्दी ही कृश्णा रेड्डी ने एतेलिए मे हैटर के केवल छात्र होने के स्थान पर सहयोगी का महत्वपूर्ण दर्जा प्राप्त कर लिया। कृश्णा रेड्डी एक मूर्ति षिल्पी थे और उन्होंने धातु की प्लेट पर भी वैसे ही सामर्थ्य लगाना षुरू की जैसे एक मुर्ति षिल्पी अपनी सामग्री पर लगाता है।

सामर्थ्य षक्ति की धारणा भी उनकी अलग–अलग तरह की थी। कृश्णा रेड्डी के छापो के संसार को समझने के लिए तीन चार तरह के चित्रों की चर्चा जरूरी है। यह संसार काव्यात्मक है। पानी,लहर, छपाक, बच्चें, मछली सर्कस के मसखरे आदि विभिन्न काव्यात्मक और मार्मिक अनुभवों से कृश्णा रेड्डी ने अम्ल की ताकत को महसूस किया। '' अम्ल के साथ आप खेलते है। उसके साथ आप नाचते है अम्ल के साथ आप की पूरी साहनभूति होती है।'' यहॉ पर भी उल्लेखित है कि कृश्णा रेड्डी ने एक लम्बे

समय तक हाथ के पारम्पारिक औजारों का स्तेमाल किया। मषीनी औजारों का इस्तेमाल उन्होंने बाद में किया।

एतेलिए–17 में प्रवास के दौरान ही उसने ग्राफिक कला की एक तकनीक का विकास किया जिसे '' चिपचिपाहट प्रक्रिया'' (विस्कोसिटी) के नाम से जाना जाता है। इस प्रक्रिया से वह एक ही प्लेट से अनेक रंग का छापा तैयार कर सकते थे।

'' मैं अपने आप को मूर्ति षिल्पी कहलाने के बजाय छापा चित्रकार कहलाना पसन्द करता हूॅ पर मूर्ति षिल्प मेरा प्रेम है। मैं अपनी समस्त प्रेरणा उसी से प्राप्त करता हूॅ।''

कृश्णा रेड्डी ने एतेलिए में अम्ल, रंगों और औजारों के सामने आकार रंगों का एक अनोखा संसार पा लिया। जैसे मूर्ति षिल्प छूने की इच्छा होती है, वैसे ही कृश्णा रेड्डी ने छापा चित्रों को भी छूने की इच्छा होती है। स्वर्गीय रिचर्ड बार्थोलोम्यू ने लिखा की कृश्णा रेड्डी के छापा चित्रों तक तीन तरह से पहँचा जा सकता है बाहर की आँखों से भीतरी आँखों से या फिर हाथों से। एक ही प्लेट से कई रंगों के संसार के अनोखे विस्फोट का लगभग क्रांतिकारी आविश्कार कृश्णा रेड्डी के ही नाम है।

कृश्णा रेड्डी का प्रसिद्ध छापा चित्र ''पैस्टोरल'' (1958) है। रेड्डी के इस छापा चित्र में छापाकला की अधिकांष तकनीक व कल्पना षक्ति सम्बधित गुण आ गए है। जब इस रचनात्मक कृति को अपने सामने देखते है तब महान संगीतकार लुडविग फॅान वीटोवन की प्रसिद्ध छठी'' ''पैस्टोरलसिफनी'' से प्रभावित इस चित्र में बहुत कुछ देखा जा सकता है। यदि किसी ने यह सिंफनी सुन रखी है तो वह ग्रामीण क्षेत्र का समस्त सौन्दर्य विस्तार को पा सकते है।

यदि किसी ने यह सिंफनी सुन रखी है तब भी आप इस चित्र में अनन्त विस्तार को पा सकते है। बाद के अनेक छापाचित्रों में हम इसी विस्तार उड़ान, पानी में छपाक से पत्थर फेक देने के अनुभव को देख सकते है।

सन् 1975 ई0 में 'घुटनों के बल चलती अपू' नामक छापा चित्र श्रृंखला में कृश्णा रेड्डी की रचनात्मकता का एक भिन्न दौर आया। यह छापा तकनीक फोटो रेखांकन और छापा चित्रण का मिला जुला यह रूप कलाकार की कल्पना षक्ति को स्पेस की एक नई धारणा से जोड़ देखा है। मसखरे की श्रृंखला अपू के साथ सर्कस में नाचते सैकड़ों मसखरों को देखकर ही यह तकनीक मस्तिश्क में उत्पन्न हुयी है।

समकालीन भारतीय छापा चित्रकार कृश्णा रेड्डी का सम्पूर्ण सृजन हमें चिन्ताकर्शक तकनीकी नावाचार के अध्ययन का अवसर देता है, जो समकालीन छापाचित्रण के क्षेत्र में उनका योगदान भी है। इन्होंने बहुरंग छापा चित्रण के लिए दो नई विधियों को विकसित किया है। प्रथम विधि में स्याही की विस्कोसिटी को नियंत्रित करके रंग को अध्यारोपित किया जाता है और दूसरी विधि में बिन्दु चित्रकार की तरह बिन्दु व धारियों की मदद से रंगों की सन्निधि प्राप्त की जाती है जिसके उदाहरण के रूप में दो प्रसिद्ध

कृतियाँ ''वूमेन एण्ड हर रिफ्लेषन्स'' और ''लाइफ मूवमेंट'' देखी जा सकती है रेड्डी ने एक ही छापा प्लेट से अनेक रंगों की छापाई किया तथा इस आद्वितीय प्रक्रिया का विकास किया।

कृश्णा रेड्डी की मृत्यु 22 अगस्त 2018 ई0 को 93 वर्श की आयु में न्यूयॉर्क यू0एस0ए0 में हुई।

कृश्णा रेड्डी की तकनीक और षैली ने उन्हें एक महत्वपूर्ण छापा चित्रकार के रूप में स्थापित किया है।

रेड्डी के छापा चित्र अर्मूत है तथा जटिल बनावट के साथ प्लेटों पर सूक्ष्म ग्रिड जैसी डिजाइन के रूप में बनाये गए है। असंख्य जटिल रंग उन्होंने छापा चित्रों में प्रदर्षित किये है। वे प्रकृति के अनन्त रहस्यों के लिए एक चिन्तनषील दृश्टिकोण से चिन्हित है।

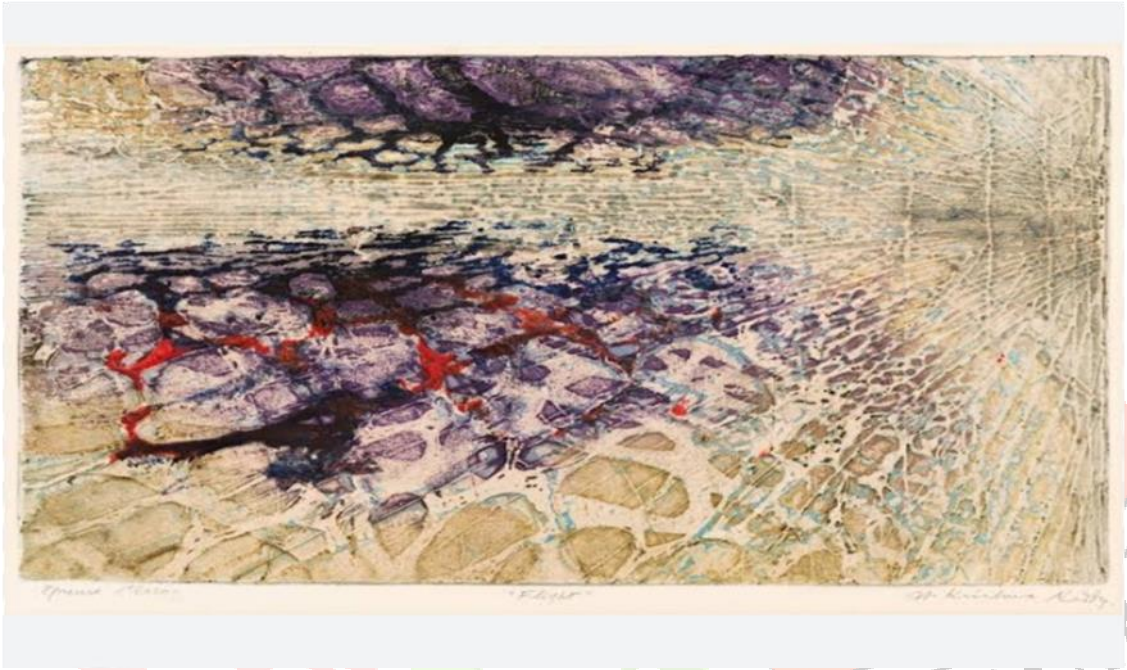

कृश्णा रेड्डी – (थ्सपहीज)

Krishna Reddy | BUTTERFLY FORMATION (Circa 1957) |...

Visit >

Krishna Reddy Art Basel OVR-Pioneers

Visit >

Krishna Reddy – River @ Krishna Reddy | StoryLTD

Visit >

Maternity

Visit >

* सन्दर्भ ग्रन्थसूची *

1. ''आधुनिक भारतीय कला का विकास'' – विनोद भारद्वाज – आधुनिक कला कोश
2. भारतीय छापा कला आदि से आधुनिक काल तक– डॉ0 सुनील कुमार
3. समकालीन भारतीय कला– डॉ0 ममता चतुर्वेदी
4. ''भारत की समकालीन कला एक परिप्रेक्ष्य'' – प्राण नाथ मागो¨